

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 24: मत्स्य अवतार

18 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



प्रलय के असीम जल में, एक स्वर्णिम एकशृंगी मत्स्य एक विशाल नौका को खींचता है जो सप्तर्षियों और समस्त जीवन के बीजों को धारण किए हैं — स्वयं भगवान, जगत को प्रलय की रात्रि से नई सृष्टि के प्रभात तक सुरक्षित मार्गदर्शन देते हुए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। भगवान वामन की समस्त कथा सुनकर, राजा परीक्षित अब भगवान के उस सर्वप्रथम अवतार का वृत्तान्त जानना चाहते हैं जिसमें वे दिव्य मत्स्य रूप में प्रकट हुए, और आठवें स्कन्ध के इस चौबीसवें और अन्तिम अध्याय में शुकदेव वह प्राचीन उद्धार-कथा उनके समक्ष पूर्णतः प्रकट करते हैं।

अध्याय को जानकारो

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 24 (चौबीसवाँ अध्याय)
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए (श्रीसूत की भूमिका-वाणी सहित)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: द्रविड़ देश में कृतमाला नदी का तट, और प्रलय-सागर
- केन्द्रीय विषय: हयग्रीव द्वारा वेदों का हरण, भगवान का दिव्य मत्स्य रूप में अवतार, सत्यव्रत से उनका मिलन, महान प्रलय, और वेदों का उद्धार
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 1–61
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

तेईसवें अध्याय में वामन-कथा अपने शान्त समापन तक पहुँची: मुक्त बली ने सुतल में प्रवेश किया, प्रह्लाद भगवान की कृपा पर विस्मित हुए, शुक्राचार्य ने यज्ञ पूर्ण किया, और उपेन्द्र बने दिव्य वामन ने इन्द्र को स्वर्ग लौटाया। तब शुकदेव ने पुष्टि की कि जो कोई भगवान की कथा सुनता है वह परम गति प्राप्त करता है। यहाँ राजा परीक्षित भगवान के प्रथम अवतार — दिव्य मत्स्य — की कथा सुनना चाहते हैं, और शुकदेव वह वृत्तान्त आरम्भ करते हैं।

भगवान अपने रूप क्यों धारण करते हैं

शुकदेव ने भगवान के समस्त अवतारों के पीछे के उद्देश्य को समझाते हुए आरम्भ किया। परमेश्वर, उन्होंने कहा, अपने विभिन्न रूप तब धारण करते हैं जब वे रक्षणीय की रक्षा करना चाहते हैं।

श्रीशुक उवाच

गोविप्रसुरसाधूनां छन्दसामपि चेश्वरः ।

रक्षामिच्छंस्तनूर्धत्ते धर्मस्यार्थस्य चैव हि ॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच गोविप्रसुरसाधूनां छन्दसामपि चेश्वरः रक्षामिच्छंस्तनूर्धत्ते धर्मस्यार्थस्य चैव हि

अर्थ: शुकदेव ने कहा — गौओं, ब्राह्मणों, देवताओं, साधुओं और वेदों की, तथा धर्म एवं समस्त अभीष्ट की रक्षा की इच्छा से, भगवान अपने विभिन्न रूप धारण करते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 5)

यद्यपि वे समस्त प्राणियों में, उच्च और निम्न, उनके अन्तर्यामी के रूप में विद्यमान रहते हैं, भगवान् — वायु की भाँति — कभी उन रूपों की उच्च अथवा निम्न अवस्था को धारण नहीं करते जिनमें वे प्रवेश करते हैं, क्योंकि वे सदा तीन गुणों से परे हैं।

हयग्रीव वेद चुरा लेता है

पिछले कल्प के अन्त में, शुकदेव ने बताया, एक नैमित्तिक प्रलय आया जब ब्रह्मा विश्राम करने गए, और तीनों लोक, पृथ्वी सहित, सागर में डूब गए। जब ब्रह्मा काल के प्रभाव से तन्द्रालु हुए, तो वेद उनके मुख से निकल पड़े, और बलशाली असुर हयग्रीव — अश्व के मुख वाले — ने उन्हें पकड़कर ले लिया।



जब कल्प के अन्त में ब्रह्मा तन्द्रालु होते हैं और लोक जल से ढँक जाते हैं, तब अश्व-मुख वाला असुर हयग्रीव उन वेदों को चुरा लेता है जो सृष्टिकर्ता के मुख से निकल पड़ते हैं (श्लोक 7-9)।

भगवान् मत्स्य रूप धारण करते हैं

हयग्रीव के इस कर्म को जानकर, भगवान् ने पवित्र ग्रन्थों को पुनः प्राप्त करने और लोकों की रक्षा करने के लिए मत्स्य का रूप धारण किया।

ज्ञात्वा तद् दानवेन्द्रस्य हयग्रीवस्य चेष्टितम् ।

दधार शफरीरूपं भगवान् हरिरीश्वरः ॥ ९ ॥

ज्ञात्वा तद् दानवेन्द्रस्य हयग्रीवस्य चेष्टितम् दधार शफरीरूपं भगवान् हरिरीश्वरः

अर्थ: दानवराज हयग्रीव के इस कर्म को जानकर, सर्वशक्तिमान् भगवान् हरि ने मत्स्य का रूप धारण किया। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 9)

सत्यव्रत को अंजलि में छोटी मछली

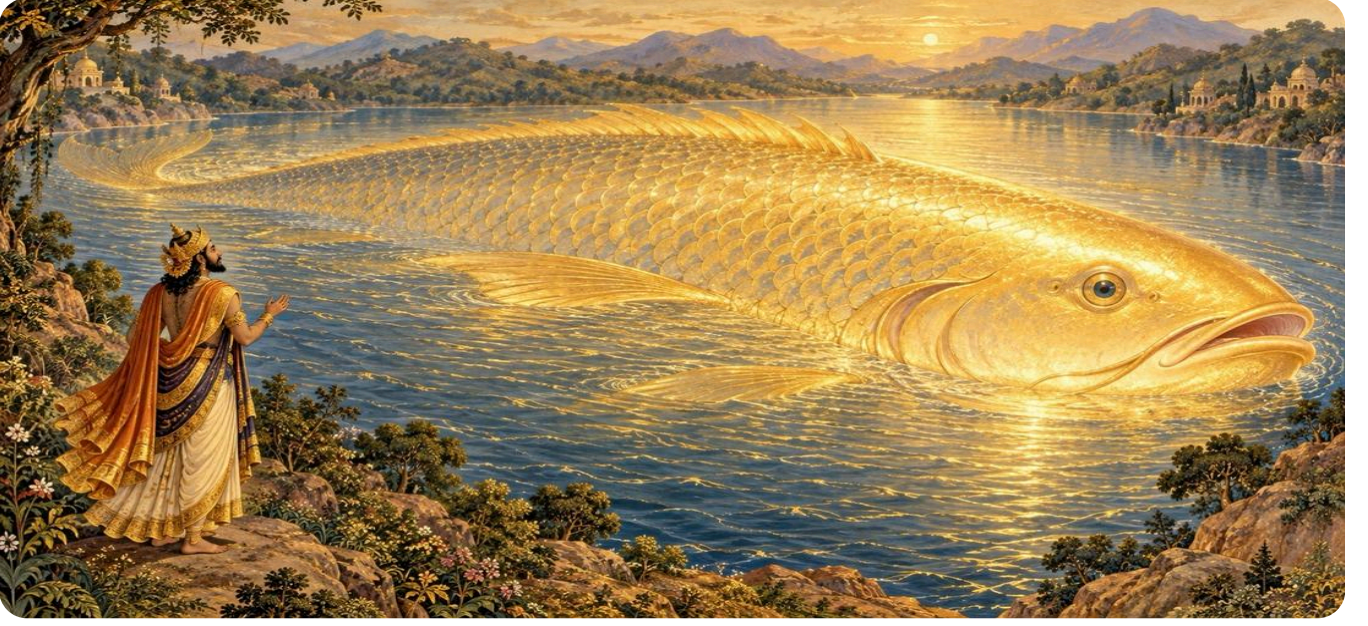
उस कल्प में सत्यव्रत नामक एक राजर्षि रहते थे, भगवान नारायण के भक्त एक महान आत्मा, जो केवल जल पर निर्वाह करते हुए तप करते थे। यही राजा आगे विवस्वान के पुत्र श्राद्धदेव बनेंगे और भगवान द्वारा वर्तमान कल्प में मनु के पद पर आसीन किए जाएँगे। एक दिन, जब सत्यव्रत कृतमाला नदी के तट पर पितरों को जलांजलि दे रहे थे, उनकी अंजलि में भरे जल में एक नन्ही मछली प्रकट हुई। जब उन्होंने उसे जल सहित नदी में छोड़ना चाहा, तो उस छोटी मछली ने करुण भाव से दयालु राजा से प्रार्थना की कि वे उसे असहाय और अपनी ही जाति को खाने वाले बड़े जीवों से भयभीत छोड़कर न जाएँ। उसकी विनती से द्रवित होकर — और यह अभी न जानते हुए कि स्वयं भगवान ने उन पर कृपा बरसाने के लिए यह रूप प्रेम से धारण किया है — सत्यव्रत ने मछली की रक्षा का संकल्प किया और उसे अपने कमण्डलु में घर ले आए।



कृतमाला नदी के तट पर, राजर्षि सत्यव्रत अपनी अंजलि में भरे जल में एक नन्ही मछली पाते हैं, जो करुण भाव से दयालु राजा से प्रार्थना करती है कि वे उसे छोड़कर न जाएँ (श्लोक 10-14)।

वह मछली जो बढ़ती ही गई

रातोंरात मछली इतनी बड़ी कि कमण्डलु उसे न समा सका, और उसने राजा से एक अधिक विशाल घर माँगा। उन्होंने उसे एक बड़े पात्र में रखा, किन्तु एक घड़ी के भीतर वह तीन हाथ की हो गई और और स्थान की याचना करने लगी। उन्होंने उसे एक सरोवर में रखा, और वह समस्त सरोवर को भरने तक बढ़ गई; उन्होंने उसे एक के बाद एक झीलों में रखा, प्रत्येक पिछली से बड़ी, और हर बार मछली उसी के अनुरूप बढ़ती गई। अन्ततः, कोई इतना बड़ा जल न पाकर, सत्यव्रत उसे सागर की ओर ले चले — और तब भी मछली बोली, चेतावनी देते हुए कि सागर के बलशाली जीव उसे खा सकते हैं, और वहाँ न छोड़ने की प्रार्थना करते हुए।



वह आश्चर्यमयी मछली बारी-बारी से प्रत्येक पात्र, सरोवर और झील को भर देती है, यहाँ तक कि विस्मित राजा सत्यव्रत उसे अन्ततः सागर की ओर ले जाते हैं (श्लोक 17-23)।

सत्यव्रत भगवान को पहचान लेते हैं

ऐसे मनोहर वचन बोलती और समस्त प्रकृति से परे बढ़ती मछली से मोहित होकर, राजा ने पूछा कि यह वस्तुतः कौन है। ऐसी शक्ति वाला कोई जलचर कभी न देखा न सुना गया, उन्होंने कहा, जो एक ही दिन में सैकड़ों मील चौड़ी झील को भरने तक बढ़ जाए। और तब, विस्मय और भक्ति में, उन्होंने सत्य को पहचान लिया।

नूनं त्वं भगवान् साक्षाद्भरिर्नारायणोऽव्ययः ।

अनुग्रहाय भूतानां धत्से रूपं जलौकसाम् ॥ २७ ॥

नूनं त्वं भगवान् साक्षाद्भरिर्नारायणोऽव्ययः अनुग्रहाय भूतानां धत्से रूपं जलौकसाम्

अर्थ: निश्चय ही आप साक्षात् अविनाशी भगवान नारायण, श्रीहरि हैं; समस्त प्राणियों की कृपा के लिए आपने जल में वास करने वाला यह रूप धारण किया है। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 27)

उन्होंने सृष्टि, पालन और प्रलय के नियन्ता, अपने भक्तों के सच्चे आत्मा और गन्तव्य, उस परम पुरुष को प्रणाम किया, और यह जानना चाहा कि यह रूप किस प्रयोजन से धारण किया गया — क्योंकि भगवान के, समस्त प्राणियों के मित्र और प्रिय आत्मा के, चरणों में शरण लेना कभी निष्फल नहीं होता।



जैसे ही मछली विशाल झील को भर देती है, राजर्षि सत्यव्रत विस्मय में झुक जाते हैं, उस अविनाशी भगवान नारायण को पहचानते हुए, जिन्होंने समस्त प्राणियों की कृपा के लिए यह रूप धारण किया है (श्लोक 25-30)।

भगवान प्रलय की भविष्यवाणी करते हैं

जिन सत्यव्रत ने इस प्रकार कहा था, उनसे जगत्पति भगवान — जो आने वाले प्रलय के सागर में विहार करना चाहते थे — ने बताया कि क्या होने वाला है। उन्होंने कहा कि उस दिन से सातवें दिन तीनों लोक प्रलय-सागर में डूब जाएँगे; और जब वह जल-प्रलय उठेगा, तब उनके द्वारा भेजी गई एक विशाल नौका राजा के पास आएगी।

त्रिलोक्यां लीयमानायां संवर्ताम्भसि वै तदा ।

उपस्थास्यति नौः काचिद् विशाला त्वां मयेरिता ॥ ३३ ॥

त्रिलोक्यां लीयमानायां संवर्ताम्भसि वै तदा उपस्थास्यति नौः काचिद् विशाला त्वां मयेरिता

अर्थ: जब तीनों लोक प्रलय के जल में विलीन हो रहे होंगे, तब मेरे द्वारा भेजी गई एक विशाल नौका तुम्हारे पास आएगी। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 33)

राजा को समस्त औषधियाँ और बीज एकत्र करके, सप्तर्षियों से घिरकर उस नौका पर चढ़ना था, और असीम जल पर निर्भय होकर, केवल ऋषियों के तेज से मार्ग पाते हुए तैरना था। जब नौका प्रबल आँधी से डोलने लगे, तो उन्हें उसे महान सर्प वासुकि द्वारा भगवान के सींग से बाँधना था, और भगवान उन्हें ब्रह्मा की दीर्घ रात्रि भर खींचते रहेंगे। और उस यात्रा में, भगवान ने वचन दिया, सत्यव्रत परम की महिमा को जान जाएँगे, जो उनके अपने हृदय में प्रकट होगी।

प्रलय और नौका

राजा को उपदेश देकर भगवान अन्तर्धान हो गए, और सत्यव्रत नियत समय की प्रतीक्षा करने लगे। पवित्र कुश घास बिछाकर और दिव्य मत्स्य रूप में भगवान के चरणों का ध्यान करते हुए बैठकर, उन्होंने सागर को उठते देखा, प्रचण्ड मेघों से भरा, और चारों ओर से पृथ्वी को डुबोते हुए। भगवान की आज्ञा का स्मरण करके, उन्होंने नौका को आते देखा; औषधियाँ और पौधे लेकर, वे महान ऋषियों सहित उस पर चढ़ गए, जिन्होंने उन्हें प्रेमपूर्वक उस भगवान का ध्यान करने को कहा जो निश्चय ही उन्हें समस्त संकट से उबारेंगे। निरन्तर ध्यान किए जाने पर, भगवान उस विशाल जल में एक स्वर्णिम एकशृंगी मत्स्य के रूप में प्रकट हुए, आकार में अपरिमेय; और सत्यव्रत ने, आनन्द से पूर्ण, नौका को उस सींग से सर्पराज को रस्सी बनाकर बाँधा, जैसा भगवान ने आज्ञा दी थी, और उनकी स्तुति की।

भगवान परम ज्ञान प्रदान करते हैं

वह ज्ञान मिलने से पहले, सत्यव्रत ने आत्मसमर्पण की एक दीर्घ प्रार्थना उँडेली, जो सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत के सर्वाधिक गहन प्रसंगों में गिनी जाती है। उन्होंने स्वीकार किया कि अनादि काल से अज्ञान में डूबी और संसार के भार से थकी आत्माएँ कदाचित् ही किसी ऐसे सत्पुरुष के निकट पहुँच पाती हैं जो उन्हें वास्तव में मुक्त कर सके; और उनके सामने खड़ी यह मछली स्वयं वही परम गुरु थी।

श्रीराजोवाच

अनाद्यविद्योपहतात्मसंविद-

स्तन्मूलसंसारपरिश्रमातुराः ।

यदृच्छयोपसृता यमाप्नुयु-

र्विमुक्तिदो नः परमो गुरुर्भवान् ॥ ४६ ॥

श्रीराजोवाच अनाद्यविद्योपहतात्मसंविदस् तन्मूलसंसारपरिश्रमातुराः यदृच्छयोपसृता यमाप्नुयु- विमुक्तिदो नः परमो गुरुर्भवान्

अर्थ: राजा ने कहा: अनादि अज्ञान से जिनका आत्मज्ञान आच्छादित है, और जो उसी अज्ञान से उत्पन्न परिश्रम से क्लान्त हैं, ऐसी आत्माएँ कदाचित् सौभाग्यवश ही किसी मुक्तिदाता के निकट पहुँचती हैं — हे प्रभु, आप ही हमारे लिए वह परम गुरु हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 46)

सत्यव्रत ने भगवान से प्रार्थना की कि वे उनके हृदय से मिथ्या इच्छा की ग्रन्थि को काट दें, भक्ति को अग्नि के समान बताते हुए — वह एकमात्र शक्ति जो स्वर्ण अथवा रजत से हर मलिनता जलाकर उसकी अपनी मूल आभा प्रकट कर सकती है — और उन्हें गुरोर्गुरुः, अर्थात् समस्त गुरुओं के गुरु कहकर सम्बोधित किया, जिनसे ही कोई भी सच्ची शिक्षा-परम्परा उद्भूत होती है। फिर उन्होंने वह भेद प्रकट किया जो उनकी प्रार्थना को स्थायी बल देता है: जैसे एक अन्धा दूसरे अन्धे के पीछे चलकर और भटक जाता है, वैसे ही जो जीवन के सच्चे लक्ष्य से अनभिज्ञ किसी गुरु को स्वीकार करता है वह पहले से अधिक भटक जाता है, चाहे उस गुरु के वचन कितने ही चतुर क्यों न हों; और जो गुरु केवल सांसारिक उन्नति और इन्द्रिय-तृप्ति सिखाता है वह शिष्य के उन्हीं बन्धनों को और कस देता है जिन्हें वह ढीला करना चाहता था। सत्यव्रत ने प्रार्थना की कि केवल भगवान का अपना उपदेश ही शाश्वत है, जो आत्मा को उसके सच्चे, आनन्दमय स्वरूप में पुनर्स्थापित करता है — और इस प्रकार प्रत्येक लघुतर शरण को त्यागकर, उन्होंने सम्पूर्ण समर्पण किया, केवल यही याचना करते हुए कि भगवान उनके हृदय की गहनतम ग्रन्थि को काट दें और उनका सच्चा गन्तव्य प्रकट करें (श्लोक 47-53)।

तब भगवान ने, अपने मत्स्य रूप में, महान जल में विहार करते हुए, राजर्षि को आत्मा का शाश्वत सत्य — सांख्य, योग और पवित्र कर्म का दिव्य ज्ञान — प्रदान किया, जिसे सत्यव्रत ने ऋषियों सहित नौका में बैठे हुए बिना किसी संशय के सुना। जब प्रलय बीत गया और ब्रह्मा पुनः उठे, तब भगवान ने असुर हयग्रीव का वध किया और वेदों को उन्हें लौटा दिया।

अतीतप्रलयापाय उत्थिताय स वेधसे ।

हत्वासुरं हयग्रीवं वेदान् प्रत्याहरद्वरिः ॥ ५७ ॥

अतीतप्रलयापाय उत्थिताय स वेधसे हत्वासुरं हयग्रीवं वेदान् प्रत्याहरद्वरिः

अर्थ: जब प्रलय समाप्त हुआ और ब्रह्मा पुनः उठे, तब भगवान हरि ने असुर हयग्रीव का वध किया और वेदों को सृष्टिकर्ता को लौटा दिया। (स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 57)

भगवान विष्णु की कृपा से, राजा सत्यव्रत, ज्ञान और विज्ञान से सम्पन्न होकर, वर्तमान कल्प में वैवस्वत मनु बने।



प्रलय की दीर्घ रात्रि भर, स्वर्णिम मत्स्य अपने सींग से बँधी नौका में बैठे सत्यव्रत और सप्तर्षियों को आत्मा का शाश्वत ज्ञान प्रदान करते हैं (श्लोक 46-58)।

इस कथा के श्रवण की महिमा

शुकदेव ने निष्कर्ष दिया कि जो कोई सत्यव्रत और दिव्य मत्स्य के संवाद को सुनता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है — और इस अवतार का बारम्बार स्मरण करने वाले को क्या फल मिलता है, इस पर शुकदेव ने कोई संशय नहीं छोड़ा:

अवतारं हरेर्योऽयं कीर्तयेदन्वहं नरः ।

सङ्कल्पास्तस्य सिध्यन्ति स याति परमां गतिम् ॥ ६० ॥

अवतारं हरेर्योऽयं कीर्तयेदन्वहं नरः सङ्कल्पास्तस्य सिध्यन्ति स याति परमां गतिम्

अर्थ: जो मनुष्य प्रतिदिन श्रीहरि के इस अवतार का कीर्तन करता है, उसके हृदय के संकल्प पूर्ण होते हैं और वह परम गति प्राप्त करता है।
(स्कन्ध 8, अध्याय 24, श्लोक 60)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान पवित्र की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं। जब भी गौएँ, ब्राह्मण, देवता, साधु, वेद और धर्म संकट में हों, भगवान उनकी रक्षा के लिए कोई रूप धारण करते हैं — यही उनके प्रत्येक अवतार का प्रयोजन है (श्लोक 5)।
2. भगवान साधक से सबसे छोटे रूप में मिलते हैं। वे सत्यव्रत के पास वैभव में नहीं बल्कि एक नन्ही, असहाय मछली के रूप में आते हैं, यह शिक्षा देते हुए कि भगवान करुणा दिखाने वालों के निकट सबसे विनम्र वेश में भी आ जाते हैं (श्लोक 12-16)।
3. दिव्यता को समाया नहीं जा सकता। वह मछली जो प्रत्येक पात्र, सरोवर, झील और सागर से बढ़ जाती है, यह प्रकट करती है कि भगवान असीम हैं, उन सब सीमाओं से परे जो हमारे मन उन पर लगाना चाहें (श्लोक 17-23)।
4. शरण लो, और भगवान स्वयं नौका बन जाते हैं। लोकों को निगलने वाले प्रलय के मध्य, भगवान नौका प्रदान करते हैं, उसे अपने ही सींग से खींचते हैं, और भक्त को नई सृष्टि तक सुरक्षित ले जाते हैं (श्लोक 33-45)।
5. भगवान ही समस्त सच्चे गुरुओं के गुरु हैं। सत्यव्रत की प्रार्थना सच्चे मार्गदर्शक और स्वयंभू “गुरु” के बीच स्पष्ट रेखा खींचती है: जो केवल सांसारिक लाभ सिखाता है वह शिष्य को मुक्त करने के बजाय बन्धनों में और अधिक जकड़ देता है, किन्तु भगवान का अपना उपदेश शाश्वत है, जो अज्ञान की ग्रन्थि काटकर आत्मा को उसके आनन्दमय, मूल स्वरूप में पुनर्स्थापित करता है (श्लोक 46-53)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

मत्स्य-कथा दो विशाल वस्तुओं को अगल-बगल रखती है: वह प्रलय जो लोकों को विलीन कर देता है, और एक मछली इतनी छोटी कि वह मनुष्य की अंजलि में समा जाए। इन दोनों के बीच इस अध्याय की समस्त शिक्षा निवास करती है। सत्यव्रत की महानता शक्ति अथवा विद्या नहीं बल्कि एक सरल करुणा है — वे एक भयभीत प्राणी को छोड़ नहीं सकते — और यही कोमलता है जिसे भगवान पुरस्कृत करना चुनते हैं, उसी असहायता के वेश में उनके पास आते हुए जिसने उनके हृदय को द्रवित किया था। फिर वह छोटी मछली बढ़ती ही जाती है, राजा के हर पात्र को फोड़ते हुए, जब तक सत्यव्रत यह समझ नहीं लेते कि जिसकी वे रक्षा कर रहे थे वह वस्तुतः सबका रक्षक है। और जब अन्ततः प्रलय आता है, तो जिस भगवान को उन्होंने शरण दी वही उन्हें शरण देने वाला बन जाता है, उनकी नाजुक नौका को शून्य अन्धकार में केवल अपने सींग और भक्त के स्थिर स्मरण से खींचते हुए। यही समस्त दिव्य कृपा का स्वरूप है: हम किसी छोटी, अपूर्ण रीति से भगवान की ओर हाथ बढ़ाते हैं — एक करुणा, एक प्रार्थना, एक शरण की खोज — और वे हमारा सम्पूर्ण उद्धार बनकर उत्तर देते हैं, हमें गहनतम रात्रि से पार नए जीवन के प्रभात में ले जाते हुए।

एक दैनिक भक्ते-अभ्यास

आज, सत्यव्रत की दुहरी भक्ति का अभ्यास करें: करुणा और स्मरण। किसी असहाय प्राणी अथवा व्यक्ति पर एक करुणा का कर्म करें जो आपको बदले में कुछ नहीं दे सकता, यह स्मरण करते हुए कि स्वयं भगवान सबसे विनम्र रूप में निकट आ सकते हैं। फिर, जैसे ऋषियों ने नौका में राजा को परामर्श दिया, कुछ क्षण जीवन की बाढ़ों के मध्य भगवान को अपनी शरण मानकर ध्यान में बिताएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” दोहराते हुए और यह विश्वास करते हुए कि जिस भगवान की ओर आप मुड़ते हैं वे ही वह नौका बन जाएँगे जो आपको प्रत्येक तूफान से सुरक्षित पार ले जाएगी।

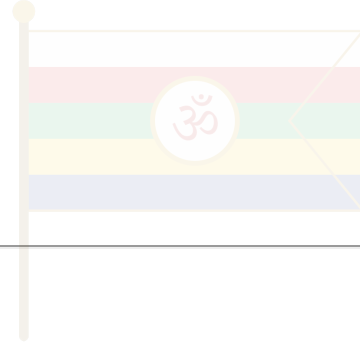
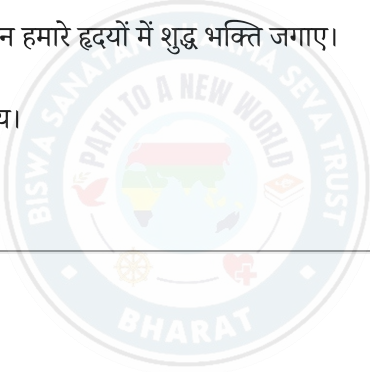
उपसंहार

चौबीसवाँ अध्याय आठवें स्कन्ध को भगवान के सबसे कोमल अवतार की कथा से पूर्ण करता है — किसी योद्धा अथवा विराट रूप में नहीं, बल्कि एक छोटी, भयभीत मछली के रूप में, जो तब तक बढ़ती गई जब तक सत्यव्रत ने उसे साक्षात् नारायण न पहचान लिया, और जिसने फिर वह सत्य प्रकट किया जिसे सिखाने के लिए यह सम्पूर्ण कथा रची गई है: कि भगवान ही समस्त सच्चे गुरुओं के गुरु हैं, और उनकी शरण ही किसी बद्ध हृदय की ग्रन्थि को काट सकती है। हम भी सत्यव्रत की भाँति, जीवन के सबसे विनम्र वेशों में भी निकट आते भगवान को पहचानें, और उन्हीं को अपना परम शरण मानें।

श्रीमद्भगवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भगवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, चौबीसवाँ अध्याय, पृष्ठ 832–837।
- श्रृंखला: श्रीमद्भगवत विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बन्ध अथवा उसके अनुमोदन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-24-matsya-divine-fish-rescue-of-the-vedas-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

